This question paper contains 4 printed pages.

B.A./B.Ed. (Pt. - III)

Roll No..

305-I

Adhu. Kvya.

B.A./B.Ed. (Four Year) (Part - III) EXAMINATION - 2026

B.A.-B.Ed. 05/06/07 (C-B)

हिन्दी साहित्य - I

(आधुनिक काव्य)

Time Allowed: Three Hours

Maximum Marks: 100

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर पुस्तिका नही दी जायेगी। अतः परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर लिखें।

किसी भी एक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गये विभिन्न प्रश्नों के उत्तर उत्तर-पुस्तिका में अलग अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर हल करें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न–पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखिए।

सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक सामने अंकित हैं।

1. निम्नलिखित पद्यावतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए। 10x4=40

(क) जायँ, सिद्धि पावें वे सुख से,
दुःखी न हों इस जन के दुःख से,
उपालम्भ दूँ मैं किस मुख से?
आज अधिक वे भाते!
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।
गये, लौट भी वे आवेंगे,
कुछ अपूर्व–अनुपम लावेंगे,
रोते प्राण उन्हें पावेंगे?
पर क्या गाते–गाते,
सखि, वे मुझसे कहकर जाते।

ruoldpapers.com

अथवा

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर, बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष, भीगे नयनो से देख रहा था प्रलय प्रवाह।

नीचे जल था ऊपर हिम था एक प्रहर था एक प्रहर

एक रात थी [illegible] कहो अभी कह दो [illegible]

(घ) हिरण्यगर्भ का उदय

मेघमय आसमान से उतर रही है

वह संध्या–सुन्दरी परी–सी

धीरे धीरे धीरे

तिमिरांचल में चंचलता का नहीं कहीं आभास

मधुर–मधुर है दोनों उसके अधर

किन्तु गम्भीर–नहीं है उनमें हास–विलास।

हँसता है तो केवल तारा एक

गुँथा हुआ उन घुँघराले काले बालों से,

हृदयराज्य की रानी का वह करता है अभिषेक।

अथवा

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास

कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास

कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त

कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त

दाने आए घर के अन्दर कई दिनों के बाद

धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद

चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद

कौए ने पाखें खुजलाई कई दिनों के बाद।

(ग) बावड़ी की उन घनी गहराइयों में शून्य

ब्रह्मराक्षस एक पैठा है,

व भीतर से उमड़ती गूँज की भी गूँज,

बड़बड़ाहट–शब्द पागल से।

गहन अनुमानिता।

तन की मलिनता

दूर करने के लिए प्रतिपल

पाप–छाया दूर करने के लिए, दिन–रात

स्वच्छ करने–

ब्रह्मराक्षस

घिस रहा है देह

हाथ के पंजे, बराबर,

ruoldpapers.com

बाँह – छाती – मुँह धोपोछप

खूब करते साफ

फिर भी मैल

फिर भी मैल!!

अथवा

जो पुल बनायेंगे

वे अनिवार्यतः

पीछे रह जायेंगे।

सेनाएँ हो जायेंगी पार

मारे जायेंगे रावण

जयी होंगे राम,

जो निर्माता रहे

इतिहास में

बन्दर कहलायेंगे।

(घ) परिताप

पश्चाताप

ओ 'अशोको की छाँहवाली

जानकी!

जानते भी क्यों गये हम

स्वर्णमृग हिंत??

क्यों गये पथ भूल?

उस वंचक के पदों में

सर्प बन सौमित्ररेखा

क्यों नहीं लिपटी

यह परिताप

यह अनुताप

अनुखन सालता है।

अथवा

राज्य पाने की नहीं की कामना

फिर भी गृहकलह।

सोचा था

शान्त तापस बन

एकान्त आरण्यक रहूँगा

ruoldpapers.com

किन्तु

पग – पग पर घटनाएँ प्रतीक्षित थी

राक्षसी षड़यन्त्रों को जैसे

मेरे निमित्त की ही उत्कण्ठा थी।

मुझे ही जैसे

उत्सव का

अन्तिम गायन होना था।

यह सब – कुछ का समापनी समारम्भ!!

कैसी त्रासदी!!

ruoldpapers.com

2. जयशंकर प्रसाद के काव्य की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

'ब्रह्मराक्षस' कविता की विशेषताएँ बताइए।

3. कवि धूमिल के काव्य सौन्दर्य पर प्रकाश डालते हुए उनकी काव्य – चेतना को स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

नागार्जुन के काव्य की विशेषताओं का अंकन कीजिए।

4. 'संशय की एक रात' प्रबंध काव्य के नायक राम की चारित्रिक विशेषताओं को उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 15

अथवा

'संशय की एक रात' प्रबंध काव्य के उद्देश्य को स्पष्ट कीजिए।

5. छायावादी काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 15

अथवा

नई कविता की प्रमुख विशेषताओं का विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।